प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन -

एम्. ए. करने के पश्चात् मैंने एम्. फिल. में प्रवेश किया। उपन्यास, कहानी पढ़ना मुझे हमेशा से ही अच्छा लगता था। मैं अपना शोध-कार्य उपन्यास में करना चाह रही थी तभी डॉ. श्री. अर्जुन चव्हाण सर जी ने मेरी रुचि कविताओं की ओर जगाई और कहा कि तुम कविता विधा पर शोध-कार्य क्यों नहीं करती ? क्योंकि इस विधा में तुम दस मिनट में कविता पढ़कर उसका आनंद ले सकती हो। इसके अतिरिक्त उन्होंने मुझे 'नभग' पढ़ने के लिए कहा। इसी वक्त मेरी भेट डॉ. सुलोचना अंतरेड्डी मॅडमजी से हुई, जो मेरी शोध-निर्देशिका हैं। उन्होंने मुझे 'नभग' नामक पुस्तक भी दी, जिसे मैंने जब पढ़ा तो मुझे यूँ लगा कि जिन्हें मैंने थोड़ा-बहुत जीवन में भोगा है, उन्हीं का चित्रण इस कविता में किया गया है। मुझे ये कविता अपनी ओर अपने आस-पास की लगी। इस कविता को पढ़ने के बाद मैंने इसे ही अपने शोध-प्रबंध का विषय बनाने का निश्चय किया।

शोध का विषय और उद्देश्य -

खंडकाव्य का उद्देश्य उदात्त, मानवीय संवेदनाओं को वहन करनेवाला, पाठकों को आत्मीय आनंद देनेवाला नायक के किसी एक जीवन के खंड की मार्मिक झाँकी प्रस्तुत करनेवाला होता है।

विष्णुदत्त राकेश लिखित 'नभग' खंडकाव्य को अपारंपरिक प्रबंध काव्य की प्रथम पंक्ति में रखना होगा। 'नभग' इस खंडकाव्य का प्रधान पात्र है। ऐसा नायक कि फल की प्राप्ति के बावजूद भी वह फल का भोक्ता नहीं बनता। वह राजपुत्र होकर भी सरस्वती का उपासक रहा, सदाचारी होते हुए भी क्रांतिकारी बना, प्राचीन काल में रहते हुए भी आधुनिक बना रहा।

नभग की राज्याधिकार से वंचित करने के पीछे कोई कारण होना चाहिए। कवि ने इसके लिए वर्ण व्यवस्था, नारी-शिक्षा, शिक्षा का समानाधिकार तथा राजप्रभाव से मुक्त शिक्षा के बिंदुओं को उठाया है। पुरानी तथा नई विचारधारा के संघर्ष की परिणति है- नभग का जीवन।

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

जर्जर प्रथाओं का विध्वंसक कवि मानकर राकेश जी ने आधुनिक बोध संकलित एक सर्वथा नए संदर्भ की सृष्टि की है।

कवि 'नभग' के जरिए आज की व्यावसायिक तथा उदात्त जीवन की मूल्यहीन शिक्षा के अंधकूप से अपने विद्यार्थियों तथा आचार्यों को निकालने का कवि का उद्देश्य है। 'नभग' में राकेश जी को अपनी संपूर्ण विचारधारा को अंतर्हित करने का अवसर मिला है।

विषय का महत्त्व एवं व्याप्ति -

प्रस्तुत 'नभग' खंडकाव्य में वर्तमानकालीन अनेक समस्याएँ, अनेक प्रश्न, मूल्य तथा आदर्श का उद्घाटन किया हुआ मिलता है। मुख्यतः कवि की संपूर्ण विचारधारा को 'नभग' खंडकाव्य में अंतर्विहित करने का प्रयास परिलक्षित होता है।

कवि विष्णुदत्त ने नभग को वर्ण व्यवस्था का विरोधक, नारी-शिक्षा का समर्थक, नारी समानाधिकार, शिक्षा का सभी को अधिकार, राजप्रभाव से शिक्षा की मुक्ति आदि का समर्थक माना है। इसमें इक्ष्वाकु को परंपरा का अंध समर्थक माना है। बड़ा भाई इक्ष्वाकु और नभग में वैचारिक मतभेद होते हैं। नभग के व्यक्तित्व में नई और पुरानी विचारधारा के प्रति संघर्ष दिखाई देता है।

नभग के शिक्षा-विषयक विचार आधुनिक युगबोध को साकार करते हैं। नभग की धारणा है कि शिक्षा मुक्ति का द्वार है, संस्कृति का आलोक है, शिक्षा से ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हो, शिक्षा में भेदभाव न हो, आश्रमों की शिक्षा सभी जाति-बिरादरियों के छात्रों को खुली हो। यहाँ नभग की सर्वशिक्षा अभियान की प्रवृत्ति उभर उठी दिखाई देती है। नभग स्वायत्त शिक्षा के पक्षधर हैं। वे अनुदान से उपलब्ध शिक्षा को उचित नहीं मानते हैं। अनुदान राशि शिक्षा की स्वायत्ता पर आँच लाती है, शिक्षा को स्वतंत्र रखकर ही युगनिर्माण किया जाता है, शिक्षा लाभ की पूँजी न होकर दान की विरासत होती है। राजनीतिक शक्तियाँ शिक्षा पर संकट खड़ा करती हैं, नभग शासन की काली छाया से शिक्षा को दूर रखना चाहता है, वे अपने हिस्से की राज-पूँजी गुरुकुल पर खर्च करना चाहते हैं। नभग की अवधारणा है कि शिक्षकों की मुट्ठी में नई पीढ़ी का मुक्त भविष्य सुरक्षित रहता है, ज्ञान कभी भी धूमिल नहीं होता है। शिक्षा मनुष्य के मन में आत्मबल भर देती है। आज बौद्धिक स्वातंत्र्य को छीनकर शिक्षा को कुंठित बनाया जा रहा है,

गुणवत्ता विहिन लोग ज्ञान की प्रगति को अवरूद्ध बनाते हैं। नभग शिक्षा का महत्त्व विशद करते हैं।

स्पष्ट है कि खंडकाव्य के नायक में जितने भी गुण होते हैं, ये सब नभग में लक्षित होते हैं। वह वर्णाश्रम व्यवस्था, जातीय भेदभाव का विरोधी था, वह जन्म से नहीं कर्म से जाति-व्यवस्था को माननेवालों में से एक था। उन्होने नारी शिक्षा के दरवाजे खोल दिए थे, नई पीढ़ियों को गुरु कर्तव्य का दायित्व नभग ने समझाया था, दुर्बल बच्चों की स्वस्था मानसिकता पर वे बल देते थे, शिक्षा से राष्ट्र-भक्ति का निर्माण छात्रों में वे करना चाहते थे, एक शोषण मुक्त समाज का निर्माण करना चाहते हैं।

प्रस्तुत खंडकाव्य में विविध विषयों पर व्यक्त किए गए नभग के विचार प्रगतिवादी, साम्यवादी, मार्क्सवादी, गांधीवादी लगते हैं। कवि राकेश जी ने नायक नभग का साधारणीकरण करके पुराण से आधुनिक संदर्भों को जोड़ने का यथार्थवादी प्रयत्न किया है।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए हैं -

1) कवि विष्णुदत्त राकेश जी का व्यक्तित्व और कृतित्व कैसा रहा होगा ?
2) 'नभग' खंडकाव्य की विषयगत विवेचना की विशेषता क्या है ?
3) 'नभग' खंडकाव्य में शिक्षा क्षेत्र के संदर्भ में आधुनिकता बोध किस प्रकार व्यक्त हुआ है ?
4) 'नभग' खंडकाव्य में नारी जीवन के संदर्भ में आधुनिक दृष्टि किस प्रकार आई है ?
5) 'नभग' खंडकाव्य में विविध समस्याओं के संदर्भ में आधुनिक बोध कैसे प्रकट होता है ?

प्रस्तुत विषय विस्तृत एवं गहन है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने इसे पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है।

विषय की व्याप्ति -

प्रथम अध्याय - ''विष्णुदत्त राकेश : व्यक्तित्व और कृतित्व''

प्रस्तुत अध्याय में राकेश जी के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में जानकारी ली गई है। इसके अंतर्गत जन्म, परिवार, शिक्षा आदि की जानकारी ली है। कृतित्व में रचना और पुरस्कार आदि की जानकारी प्रस्तुत की है। अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

द्वितीय अध्याय - ''विष्णुदत्त राकेश का 'नभग' खंडकाव्य : विषयगत विवेचन'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत काव्य का विषयगत विवेचन प्रस्तुत किया है। अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय - '''नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : शिक्षा क्षेत्र के संबंध में'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत राकेश जी के शिक्षा विषयक विचार प्रस्तुत किए हैं। निपक्षपाती शिक्षा, राजप्रभाव से मुक्त शिक्षा, शिक्षालयों की स्वायत्तता, शिक्षक का महत्त्व, आदर्श शिक्षक शिक्षा में स्वभाषा का महत्त्व, शिक्षा नीति में भ्रष्टाचार, परिवर्तनवादी गुरुकुल, नई मुक्त शिक्षा पद्धति का स्वीकार, शिक्षालयों में प्रदूषित माहौल, नारी शिक्षा, धर्म से संबंधित शिक्षा, शिक्षा से वंचित सर्वसामान्य, सर्व शिक्षा अभियान, रचनात्मक शिक्षा की अनिवार्यता, शिक्षा से ज्ञान शक्ति के साथ-साथ कर्म शक्ति भी बढ़ जाती है, गुरुकुल का आचार्य द्विजेतर बालक को करना, सदोष शिक्षा पद्धति, शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन की अपेक्षा, शिक्षा आत्मोन्नति की खान है, शिक्षा मुक्ति का मार्ग है आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की है। अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

चतुर्थ अध्याय - ''नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : नारी जीवन के संदर्भ में''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत नारी जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है। घोषा के विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया है। प्रेरणा रूपी नारी, ऋषिका नारी, कवयित्री घोषा, गृहस्थाश्रम को माननेवाली नारी, प्रतिभा संपन्न नारी, सक्रिय नारी आदि पहलुओं पर प्रकाश डाला गया। अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

पंचम अध्याय - '''नभग' खंडकाव्य में आधुनिकता बोध : विविध समस्याओं के संदर्भ में'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विविध समस्याओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की है। वर्ण व्यवस्था की समस्या, बौद्धिक बल की समस्या, भाई-बिरादरी की समस्या, आर्थिक समस्या, शैक्षिक अनुशासन की समस्या, शिक्षा में राजनीति की समस्या, वृद्धों की समस्या, स्त्री-पुरुष समानता की समस्या, नारी-शिक्षा की समस्या, पर्यावरण की समस्या, प्रतिभावान व्यक्ति की

समस्या, न्याय व्यवस्था की समस्या, बच्चों की स्वास्थ्य की समस्या आदि की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की है। अंत में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अतः अंत में उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को दिया गया है। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1) प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध राकेश जी द्वारा लिखित खंडकाव्य 'नभग' में चित्रित यथार्थ पर केंद्रित है। हिंदी साहित्य में राकेश जी द्वारा चित्रित यथार्थ का इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अध्ययन पहली बार संपन्न हुआ है।

2) राकेश के साहित्य में चित्रित आधुनिक नारी शिक्षा के प्रति, आदर्श राजनीति के प्रति, भ्रष्टता से मुक्त शिक्षा पद्धति और जाति भेद विरहित एक सर्वकस समाज की अपेक्षा कवि ने की है। यही उनकी काव्य की मौलिकता है।

3) प्रस्तुत शोध-प्रबंध में विवेच्य खंडकाव्य में चित्रित वर्तमान में पनपी विभिन्न समस्याओं का भी स्वतंत्र रूप से विवेचन-विश्लेषण किया है।